ॐ द्यौः शान्ति

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः
पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ। द्युलोक [स्वर्गलोक] में
व सम्पूर्ण अन्तरिक्ष में शान्ति प्रसरित हो।
समस्त पृथ्वी पर शान्ति परिव्याप्त हो
तथा समस्त जलाशयों में शान्ति व्याप्त हो।
समस्त औषधियों और वनस्पतियों में शान्ति जगमगाए।
समस्त देवी-देवताओं को शान्ति प्राप्त हो।
परब्रह्म में शान्ति हो।
सर्वत्र तथा सदैव शान्ति हो —
शान्ति, अन्य कुछ नहीं, केवल शान्ति।
हमारे अन्तर में शान्ति की वृद्धि हो।
ॐ। शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

© एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

शान्ति मन्त्र 'ॐ द्यौः शान्ति' विश्वशान्ति के लिए की जाने वाली वह प्रार्थना है जिसका उल्लेख यजुर्वेद में मिलता है।

इस शान्ति मन्त्र में यह समझ निहित है कि बाह्य जगत की शान्ति और हमारे अपने अन्दर की शान्ति, एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं; दोनों एक-दूसरे को सम्बल प्रदान करती हैं। जब हम 'ॐ द्यौः शान्ति' के

पवित्र वर्णों का पाठ करते हैं तो हम अपने इस सद्भावपूर्ण संकल्प को स्वरों द्वारा व्यक्त करते हैं कि समस्त सृष्टि में शान्ति व्याप्त हो और साथ ही हम यह प्रार्थना भी करते हैं कि हम अपने अन्तर में इसी शान्ति की अनुभूति करें।

मन्त्रोच्चारण को सुनकर व इसके साथ पाठ करके, आप शान्ति के लिए यह प्रार्थना अर्पित कर सकते हैं। ऐसा करते समय, ध्यान दें कि आपके मन और आपके आस-पास के वातावरण पर इस मन्त्र के स्पन्दनों का क्या प्रभाव हो रहा है।

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।